वर्तमान चुनौतियाँ और युवावर्ग

वर्तमान चुनौतियाँ और युवावर्ग

लेखक :
ब्रह्मवर्चस्

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१२ मूल्य : ६.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारे युवाओं से.....

हमारे युवाओं में कभी भी प्रतिभा और क्षमता की कमी नहीं रही है। आज भी उनके समक्ष अपार संभावनाएँ हैं। कुछ भी असंभव नहीं है। समस्या केवल यही है कि उन्हें अनेकानेक विकट एवं विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है। समाज में अनेक केकड़ा प्रवृत्ति के लोग उनकी टांग खींच कर नीचे गिराने को हर समय तत्पर रहते हैं। यदि वे अपने मानव जीवन के उद्देश्य को भलीभाँति पहचान कर उचित पुरुषार्थ करेंगे तो वे अवश्य ही इस काजल की कोठरी से बेदाग बाहर निकलने में सफल हो जाएंगे।

इस पुस्तक के द्वारा युवावर्ग को यही संदेश देने का प्रयास किया गया है। थोड़ी सी समझदारी उनके जीवन को सफलता की स्वर्णिम आभा से आलोकित कर देगी। इस प्रकाश को अधिक से अधिक युवाओं तक अवश्य पहुँचाएँ।

-ब्रह्मवर्चस्

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वर्तमान चुनौतियाँ और युवावर्ग

परिवर्तन चक्र तीव्र गति से घूम रहा है। सामाजिक स्थिति बहुत तेजी से बदल रही है। ऐसे में मनुष्य एक विचित्र से झंझावात में फँसा हुआ है। बाह्य रूप से चारों ओर भौतिक एवं आर्थिक प्रगति दिखाई देती है, सुख-सुविधा के अनेकानेक साधनों का अंबार लगता जा रहा है, दिन-प्रतिदिन नए-नए आविष्कार हो रहे हैं, पर आंतरिक दृष्टि से मनुष्य टूटता और बिखरता जा रहा है। उसका संसार के प्रति विश्वास, समाज के प्रति सद्भाव और जीवन के प्रति उल्लास धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है। अब तो समाज में चारों ओर आपसी सौहार्द्र, समरसता एवं सात्त्विकता के स्थान पर कुटिलता, दुष्टता और स्वार्थपरता ही दृष्टिगोचर होती है। बुराई के साम्राज्य में अच्छाई के दर्शन अपवाद स्वरूप ही हो पाते हैं।

जो देश कभी जगद्गुरु हुआ करता था, उसी भारतवर्ष के राष्ट्रीय, सामाजिक, पारिवारिक एवं व्यक्तिगत जीवन में चतुर्दिक अराजकता और उच्छृंखलता छाई हुई है। जीवन मूल्यों एवं आदर्शों के प्रति आस्था-निष्ठा की बात कोई सोचता ही नहीं। वैचारिक शून्यता और दुष्प्रवृत्तियों के चक्रव्यूह में फँसा हुआ दिशाहीन मनुष्य पतन की राह पर फिसलता जा रहा है। उसे संभालने और उचित मार्गदर्शन देने वालों का भी अभाव ही दिखाई देता है। कुछ गिने-चुने धार्मिक आध्यात्मिक संगठन, सामाजिक संस्थाएँ और प्रतिष्ठान ही इस दिशा में सक्रिय हैं, अन्यथा अधिकांश तो निजी स्वार्थ एवं व्यवसायिक दृष्टिकोण से ही कार्यरत लगते हैं। ईमानदारी, मेहनत और सत्यनिष्ठा के साथ निःस्वार्थ भाव से स्वेच्छापूर्वक जनहित के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कार्य करने वालों को लोग मूर्ख ही समझते हैं। उनके परिश्रम एवं भोलेपन का लाभ उठाकर वाहवाही लूटने वाले समाज के ठेकेदार सर्वत्र दिखाई देते हैं।

समाज सेवा का क्षेत्र हो या धर्म-अध्यात्म अथवा राजनीति का, चारों ओर अवसरवादी, सत्तालोलुप, आसुरी वृत्ति के लोग ही दिखाई देते हैं। शिक्षा एवं चिकित्सा के क्षेत्र, जहाँ कभी सेवा के उच्चतम आदर्शों का पालन होता था, आज व्यवसायिक प्रतिस्पर्धा के केंद्र बन गए हैं। व्यापार में तो सर्वत्र कालाबाजारी, चोरबाजारी, बेईमानी, मिलावट, टैक्सचोरी आदि ही सफलता के मूलमंत्र समझे जाते हैं। त्याग, बलिदान, शिष्टता, शालीनता, उदारता, ईमानदारी, श्रमशीलता का सर्वत्र उपहास उड़ाया जाता है। सामान्य नागरिक से लेकर सत्ता के शिखर तक अधिकांश अनीति-अनाचार में आकंठ डूबे हैं। प्रत्येक व्यक्ति के मन में निजी स्वार्थ व महत्त्वाकांक्षाओं के साथ-साथ ईर्ष्या, घृणा, बैर की भावनाएँ जड़ जमाए हुए हैं। ऐसी विकृत मानसिकता के चलते मनुष्य वैज्ञानिक प्रगति से प्राप्त सुख-सुविधा के अनेकानेक साधनों का भी दुरुपयोग ही करता रहता है। फलतः उसका शरीर अंदर से खोखला होकर अनेकानेक रोगों का घर बनता जा रहा है। मनुष्य की इच्छाओं व कामनाओं की कोई सीमा नहीं है, धैर्य व संयम की मर्यादाएँ टूट रही हैं, अहंकार व स्वार्थ का नशा हर समय सिर पर सवार रहता है। ऐसी स्थिति में क्या सामाजिक समरसता व सहयोग की भावना जीवित रह सकती है? सुख-शांति व आनंद के दर्शन हो सकते हैं? जहाँ चारों ओर धनबल और बाहुबल का नंगा नाच हो रहा हो, घपलों-घोटालों का बोलबाला हो, उस समाज में क्या वास्तविक प्रगति कभी हो सकती है?

मानव के इस पतन-पराभव का कारण खोजने का यदि हम सच्चे मन से प्रयास करें तो पता चलेगा कि सारी समस्याओं की जड़ पैसा है। सारा संसार ही अर्थप्रधान हो गया है। प्रत्येक व्यक्ति हर समय अधिक से अधिक धन कमाने की उधेड़बुन में लगा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहता है। इसके लिए अनीति, अनाचार, भ्रष्टाचार जैसे सभी साधनों का खुलेआम प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार कमाए हुए धन के कारण ही समाज में मूल्यहीन भोगवादी संस्कृति का अंधानुकरण और विलासिता का अमर्यादित आचरण सर्वत्र देखा जा सकता है। यह सब समझते हुए भी आदमी पैसे के पीछे पागल हो रहा है।

युवावर्ग पर इसका प्रभाव

आज का युवावर्ग ऐसे ही दूषित माहौल में जन्म लेता है और होश संभालते ही इस प्रकार की दुखद एवं चिंताजनक परिस्थितियों से रूबरू होता है। आदर्शहीन समाज से उसे उपयुक्त मार्गदर्शन ही नहीं मिलता और दिशाहीन शिक्षा पद्धति उसे और अधिक भ्रमित करती रहती है। ऐसे दिग्भ्रमित और वैचारिक शून्यता से ग्रस्त युवाओं पर पाश्चात्य अपसंस्कृति का आक्रमण कितनी सरलता से होता है, इसे हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं। भोगवादी आधुनिकता के भटकाव में फँसी युवा पीढ़ी दुष्प्रवृत्तियों के दलदल में धँसती जा रही है। विश्वविद्यालय और शिक्षण संस्थान जो युवाओं की निर्माणस्थली हुआ करते थे आज अराजकता एवं उच्छृंखलता के केंद्र बन गए हैं। वहाँ मूल्यों एवं आदर्शों के प्रति कहीं कोई निष्ठा दिखाई ही नहीं देती। सर्वत्र नकारात्मक एवं विध्वंसक गतिविधियाँ ही होती रहती हैं। ऐसे शिक्षक व विद्यार्थी जिनमें कुछ सकारात्मक और रचनात्मक कार्य करने की तड़पन हो, बिरले ही मिलते हैं। इसी का परिणाम है कि हमारा राष्ट्रीय एवं सामाजिक भविष्य अन्धकारमय लग रहा है।

'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' – जैसा बीज होगा, जैसी पौध होगी, उसी के अनुरूप तो वृक्ष विकसित होगा, पुष्पित, पल्लवित और फलित होगा। आज की युवापीढ़ी की जो दुर्दशा हो रही है, उसका सर्वप्रथम दायित्व तो उनके माता-पिता और परिवार का ही है। वे स्वयं ही दुष्प्रवृत्तियों के शिकंजे में फँसे हुए हैं फिर अपनी संतान को उचित शिक्षा व संस्कार कहाँ से दे सकेंगे? युवावस्था की प्रारंभिक स्थिति में अनेक शारीरिक व मानसिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिवर्तन होते हैं। जीवन का यह काल अत्यन्त उथल-पुथल भरा होता है जब वह चारों ओर की परिस्थितियों का अपने अनुसार विवेचन करता है। इसमें अनेक प्रतिमान ध्वस्त होते हैं और नए बनते हैं। इस अवधि में वह अपने अस्तित्व को परिवार व समाज में स्थापित करने का प्रयास करता है। अपनी अस्मिता को खोजता है और ऐसे आदर्श नायक की तलाश करता है, जिसके अनुरूप स्वयं को ढाल सके। इस खोजबीन की उलझन में उसे घर से तो कुछ विशेष मिल नहीं पाता और बाहर उसका सर्वत्र शोषण ही होता है। एक समय था जब अभिमन्यु को गर्भावस्था में ही माता-पिता से शिक्षा व संस्कार प्राप्त हुए थे। आज के माता-पिता एवं समाज के कर्णधार स्वयं ही यह चिंतन करें कि वे अपने अभिमन्युओं को क्या बना रहे हैं ?

पहले युवापीढ़ी को अपने आदर्श ढूँढने के लिए परिवार व समाज के अतिरिक्त आदर्श ग्रंथों का भी सहारा रहता था जो कि भारतीय संस्कृति की बहुमूल्य धरोहर हैं। आज वेद, उपनिषद, पुराण आदि को पढ़ना या उन पर चर्चा करना तो दूर, उनका नाम लेना भी पिछड़ेपन की निशानी समझी जाती है। आदर्श व प्रेरक साहित्य के प्रति अभिरुचि में भारी कमी आयी है। अश्लील एवं स्तरहीन साहित्य की भरमार है। उच्चस्तरीय साहित्यिक रचनाएँ पढ़ने की परंपरा लुप्त हो रही है। युवावर्ग समझ नहीं पाता कि वह क्या पढ़े और कैसे पढ़े ? देवसंस्कृति की इस उपेक्षा के कारण ही आज वह किसी सज्जन, वीर, महात्मा या महापुरुष को अपना आदर्श बनाने के स्थान पर टी.वी. और फिल्मों के पर्दे पर उनको खोजता है। वहाँ उसे हिंसा, अश्लीलता, फैशनपरस्ती, स्वच्छंदता, फूहड़ता आदि के अतिरिक्त कुछ मिलता ही नहीं। इसी सब का अनुसरण करने को वह प्रगतिशीलता समझता है। यही कारण है कि चारों ओर अनुशासनहीनता की पराकाष्ठा और स्तरहीन आदर्शों की अंधभक्ति ही दिखाई देती है। ऐसे में टी.वी. पर अनेकानेक सैटेलाइट चैनलों द्वारा हमारी लोकसंस्कृति को तोड़-मरोड़ कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रस्तुत करने का ही यह परिणाम है कि खान-पान, वेश-भूषा, आचार-व्यवहार आदि सभी क्षेत्रों में युवाओं द्वारा पाश्चात्य अपसंस्कृति का अंधानुकरण हो रहा है। भारत की बहुमूल्य सांस्कृतिक परंपराओं की वह अवहेलना करता है या उपहास उड़ाता है। पाश्चात्य संस्कृति के जीवनमूल्यों को अपनाती युवापीढ़ी अपने देश की संस्कृति को हेय दृष्टि से देखने लगी है। प्रगतिशीलता के नाम पर नैतिकता का परित्याग और भारतीयता का विरोध विशेष उपलब्धियों में गिना जाता है। उसी को आदर्श हीरो का सम्मान मिलता है।

राजनीतिज्ञों के दुष्चक्र ने तो युवाओं को और अधिक उलझा दिया है। शिक्षाकेंद्र तो पूरी तरह से राजनैतिक द्वन्द्व का अखाड़ा बन गये हैं। इस युद्ध में युवावर्ग का प्रयोग कच्चे माल के रूप में खुलेआम होता है। सुरा-सुंदरी तक उन्हें उपलब्ध कराने में राजनैतिक दलों को कोई हिचक नहीं होती। काले धन की थैलियाँ तो खुली ही रहती हैं। इस प्रकार के दूषित वातावरण में युवापीढ़ी ऐसी कुसंस्कृति को अपनाने के लिए मजबूर है जहाँ व्यक्तिगत जीवन में नैतिकता और नाते-रिश्तों की पवित्रता का कोई अर्थ नहीं रह जाता। यौन उच्छृंखलता को फैशन व आधुनिकता का प्रतीक समझा जाता है जिससे युवक-युवतियाँ आत्मघाती दुष्चक्र में उलझते जाते हैं। उनकी ऊर्जा और प्रतिभा किसी सार्थक कार्य में लगने के स्थान पर सौन्दर्य प्रतियोगिताओं, फैशन शो और फिल्मों में बर्बाद होती है तथा अपराधी व बुरे लोगों के जाल में उनके फँसने की संभावनाएँ बढ़ती जाती हैं। उच्च आदर्शों एवं प्रेरणा स्रोतों के अभाव में वे नित नए कुचक्रों में उलझते रहते हैं। सामाजिक एवं राष्ट्रीय दायित्व बोध से कटे हुए ऐसे लोगों का जीवन मात्र स्वार्थपरता के संकुचित घेरे तक ही सीमित रह जाता है।

भविष्य की संभावनाएँ

ऐसे अंधकारमय परिदृश्य में भी आशा की किरण तो होती ही है। माना कि हताशा व निराशा से ग्रस्त युवापीढ़ी में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिस्थितियों से जूझने की क्षमता चुकती जा रही है पर वह समाप्त नहीं हुई है। उसे विकसित करने के अनेकानेक साधन उपलब्ध हैं। सांस्कृतिक एवं मानसिक परतंत्रता के अदृश्य पाश से स्वयं को मुक्त करके विश्वक्रांति का अग्रदूत बनने की क्षमता भी उसमें है। युवाशक्ति ही राष्ट्र की उज्ज्वल आशा का प्रतीक है। देश को दुर्गति से प्रगति के पथ पर ले जाने की शक्ति उसके रग-रग में समाई हुई है। शून्य से शिखर तक पहुँचने का पुरुषार्थ वही कर सकता है।

दुनिया में बुराई तो बहुत है। चारों ओर झूठ, फरेब, धोखा और बेईमानी फैली हुई है, पर हर समय इन्हीं बातों पर चिंतन और चर्चा करते रहने से क्या लाभ? संसार में आसुरी प्रवृत्ति के लोग तो सदैव रहे हैं चाहे वह रामायण-महाभारत काल हो या आज का युग। उनकी संख्या कभी कम तो कभी अधिक अवश्य होती है। यही कारण है कि सात्त्विक एवं दैवी प्रवृत्ति के लोग भी समाज में हर समय रहते हैं। हनुमान जी को भी रात के अंधेरे में लंका के राक्षसों के बीच एक देवस्वरूप व्यक्ति विभीषण के रूप में मिल गया था। हम भी यदि थोड़ा सा सजग होकर देखें तो अपने आसपास अनेक अच्छे व्यक्ति हमें मिल जाएंगे जो ईमानदार, चरित्रवान और नैतिक मूल्यों का पालन करने वाले हैं। वे सदैव जीवन के प्रति आशावादी एवं सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं।

युवापीढ़ी में तो ऐसे सच्चरित्र लोगों की भरमार है। समस्या केवल इतनी भर है कि उन्हें बिगड़ने से किस प्रकार बचाया जाए और वे स्वयं भी किस प्रकार इस काजल की कोठरी से अपने को बचाकर बेदाग बाहर निकल सकें। असली दायित्व तो युवाओं का ही है। यदि वे सांसारिक दुष्प्रवृत्तियों के मकड़जाल में फँसने के कुप्रभावों को समय रहते समझ लें और उनके प्रलोभन में न आएं तो कोई भी उन्हें कुमार्ग पर नहीं ले जा सकेगा। यदि उनमें स्वयं को सुधारने की इच्छाशक्ति जागृत हो जाएगी तो अन्य सत्पुरुषों की बातें भी सरलता से उनके गले उतर जाएंगी। स्वयं को सुधार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर ही वे सारे संसार को सुधार सकेंगे। 'अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है', इस तथ्य को समझ लेने से ही सबका कल्याण होगा।

सामाजिक स्थिति में समय-समय पर बदलाव तो आते ही रहते हैं। कभी सकारात्मक और कभी नकारात्मक। वर्तमान समय में तो परिवार, समाज और राष्ट्र की धुरी बहुत बुरी तरह से लड़खड़ा रही है और संपूर्ण व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन आवश्यक हो गया है। प्रश्न है-इसे कौन कर सकता है? और कौन करेगा?

इतिहास साक्षी है कि संसार में जितनी भी महत्त्वपूर्ण क्रांतियाँ हुई हैं, उनमें युवाओं की भूमिका सदैव ही अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही है। मानव जीवन का सर्वश्रेष्ठ समय युवावस्था ही होता है। उत्साह एवं उमंग से भरपूर युवाओं में पहाड़ से टकराने की ललक होती है। कठिन से कठिन परिस्थितियों से भी जूझने का साहस होता है। उनकी शारीरिक एवं मानसिक शक्तियाँ भी अपने विभिन्न रूपों में प्रस्फुटित होती हैं और असंभव को भी संभव कर दिखाने की क्षमता रखती हैं। वस्तुत: युवा है ही अपरिमित ऊर्जस्विता, उत्साह एवं कुछ कर गुजरने की तमन्ना का नाम, जिसके स्वभाव में वे सभी गुण सहज ही विद्यमान होते हैं, जो किसी भी राष्ट्र व समाज का कायाकल्प करने के लिए पर्याप्त होते हैं। इस आधार पर इन्हें समाज की आशाओं एवं राष्ट्र के विश्वास का पर्याय कहना अनुचित न होगा।

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज के अनुसार भारत में १६ से २५ वर्ष के युवाओं की संख्या २१.५ करोड़ है। इतनी बड़ी जनशक्ति यदि नकारात्मक गतिविधियों में लिप्त हो जाए तो देश को शीघ्र ही रसातल में पहुँचा सकती है। पर यदि यह युवाशक्ति सकारात्मक और रचनात्मक मार्ग पर चल पड़े तो भारत को संसार का सिरमौर बना दे। आज अपने धनबल और बाहुबल के बूते कोई देश संसार में अपनी दादागिरी तो चला सकता है, पर केवल कुछ समय के लिए ही। अपने सद्गुणों और सद्विचारों के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बल पर ही भारत कभी विश्व में जगद्गुरु कहलाता था। उसे पुनः उसी पद पर पुनर्स्थापित करने की सामर्थ्य केवल हमारी युवा पीढ़ी में ही है।

क्या करें ? कैसे करें ?

सर्वप्रथम युवाओं को अपने मन से निराशा एवं हताशा के भावों को जड़ से उखाड़ फेंकना होगा। अपनी शक्तियों पर, अपनी क्षमता व प्रतिभा पर, अटूट विश्वास जगाना होगा। नेपोलियन ने कहा था कि 'असंभव' शब्द उसके शब्दकोष में है ही नहीं। इसे अपने जीवन का आधार बनाकर सदैव यही विचार करना होगा कि संसार में ऐसा कोई कार्य नहीं जो हम न कर सकें। कल्पना करें कि आपके शरीर में शक्ति स्रोत फूट रहा है, ऊर्जा की धाराएँ प्रवाहित हो रही हैं, जो कठिन से कठिन कार्य को भी चुटकियों में पूरा कर सकती हैं। उज्ज्वल भविष्य हमारे स्वागत हेतु तत्पर है। अपने भीतर इस प्रकार का आत्मविश्वास दृढ़तापूर्वक स्थापित करने पर ही हम जीवन की अनेक चुनौतियों का सामना करने में सफल हो सकेंगे।

हमारे भीतर यह आत्मविश्वास कैसे जागे ? कैसे परिपुष्ट हो ? हम किस प्रकार अपने जीवन को उत्कृष्ट बनाएं और वर्तमान चुनौतियों का भी सफलतापूर्वक सामना कर सकें ? इसे समझने से पहले हमें भारत के महान् युवा संन्यासी स्वामी विवेकानंद के एक संदेश को आत्मसात करना होगा।

उन्होंने कहा है-"प्रत्येक व्यक्ति की भाँति प्रत्येक राष्ट्र का भी एक विशेष जीवनोद्देश्य होता है। वही उसके जीवन का केंद्र है, उसके जीवन का प्रधान स्वर है, जिसके साथ अन्य सब स्वर मिलकर समरसता उत्पन्न करते हैं। किसी देश में जैसे इंग्लैण्ड में राजनैतिक सत्ता ही उसकी जीवनशक्ति है। भारतवर्ष में धार्मिक जीवन ही राष्ट्रीय जीवन का केंद्र है और वही राष्ट्रीय जीवन रूपी संगीत का प्रधान स्वर है। यदि कोई राष्ट्र अपनी स्वाभाविक जीवन शक्ति को दूर फेंक देने की चेष्टा करे, शताब्दियों से जिस दिशा की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ओर उसकी विशेष गति हुई है, उससे मुड़ जाने का प्रयत्न करे और वह इस कार्य में सफल हो जाए तो वह राष्ट्र मृत हो जाता है। अतएव यदि तुम धर्म को फेंककर राजनीति, समाजनीति अथवा अन्य किसी दूसरी नीति को अपनी जीवनशक्ति का केंद्र बनाने में सफल हो जाओ तो उसका फल यह होगा कि तुम्हारा अस्तित्व तक न रह जाएगा। यदि तुम इससे बचना चाहो, तो अपनी जीवन-शक्ति रूपी धर्म के भीतर से ही तुम्हें अपने सारे कार्य करने होंगे। अपनी प्रत्येक क्रिया का केंद्र इस धर्म को ही बनाना होगा। सामाजिक जीवन पर धर्म का कैसा प्रभाव पड़ेगा, यह बिना दिखाए मैं अमेरिकावासियों में धर्म का प्रचार नहीं कर सकता था। इंग्लैण्ड में भी बिना यह बताए कि वेदांत के द्वारा कौन-कौन से आश्चर्यजनक परिवर्तन हो सकेंगे, मैं धर्म का प्रचार नहीं कर सकता था। इसी भाँति भारत में सामाजिक सुधार का प्रचार तभी हो सकता है, जब यह दिखा दिया जाए कि इस नई प्रथा से आध्यात्मिक जीवन की उन्नति में कौन सी विशेष सहायता मिलेगी? अत: भारत में किसी प्रकार का सुधार या उन्नति की चेष्टा करने के पहले धर्म प्रचार आवश्यक है।''

लगभग सौ वर्ष पूर्व स्वामी विवेकानंद द्वारा कही गई इस बात पर गंभीरता से विचार करें। आज हमारी जो स्थिति बनती जा रही है, उसका कारण क्या यह तो नहीं है कि हम धर्म के पथ से भटक गए हैं? अपनी संस्कृति एवं परम्पराओं की उपेक्षा करने लगे हैं? और पाश्चात्य अंधानुकरणों के कारण स्वयं ही अपनी जड़ों को काटते जा रहे हैं? ऐसा लगता है कि स्वामी जी आज भी हमारे सामने खड़े हमें चेता रहे हैं, झकझोर रहे हैं। स्वामी जी की बात को आत्मसात् करके ही हम वर्तमान चुनौतियों का सामना कर सकेंगे। धार्मिक जीवन के द्वारा ही हम स्वयं को सुधार सकेंगे और समाज व राष्ट्र को भी उन्नति के मार्ग पर ले जा सकेंगे। आवश्यक है कि हम स्वयं क़ो पहचानें और धर्म के वास्तविक स्वरूप को भी जानें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वयं को पहचानो

संसार में चौरासी लाख योनियाँ हैं। भाँति-भाँति के जीव-जंतु, कीट-पतंग, पशु-पक्षी, जलचर-नभचर हमें अपने चारों ओर दिखाई देते हैं। इन्हीं प्राणियों में से एक मनुष्य भी है। यह तो निर्विवाद सत्य है कि संसार के सभी प्राणियों में मनुष्य सर्वश्रेष्ठ है। सर्वगुण संपन्न शरीर के साथ-साथ उसे बुद्धि-विवेक का वरदान भी प्राप्त है। वह सोच सकता है, चिंतन-मनन कर सकता है, बोल सकता है, समझ सकता है, हँस सकता है, रो सकता है और हमारी कल्पना से भी परे यदि कोई कार्य हो तो उसे भी कर सकता है। अन्य किसी प्राणी में ऐसी क्षमता नहीं है। वे तो केवल इतना भर कर पाते हैं कि जिससे उनका जीवन चलता रहे। हजारों-लाखों वर्ष पूर्व भी वे जिस स्थिति में थे आज भी उसी रूप में हैं। उनके घोंसला या बिल आदि बनाने का जो ज्ञान तब था वही आज भी है। दूसरी ओर मनुष्य अपनी बुद्धि-विवेक के द्वारा प्रगति की नित नई ऊँचाइयों को छू रहा है।

हमें यह विचार करना होगा कि इस सुर-दुर्लभ मानव योनि में हमारा जन्म क्यों हुआ है? भगवान् ने हमारे ऊपर यह विशेष कृपा क्यों की है? इस जन्म से पूर्व हम कहाँ थे? और मृत्यु के बाद हमारा क्या होगा? हम आस्तिक हों या नास्तिक, पर यह तथ्य तो अब सभी मानते हैं कि आत्मा और शरीर अलग-अलग हैं। आत्मा के निकल जाने पर शरीर मृत हो जाता है, चाहे वह मनुष्य शरीर हो या फिर किसी भी जीव-जंतु का। हमारे साथ भी हजारों-लाखों वर्षों से ऐसा ही हो रहा है। अपने कर्मों के अनुसार फल तो सबको भोगना ही पड़ता है। हमने पूर्व जन्मों में भी जैसे अच्छे-बुरे कर्म किए थे, उन्हीं का फल भोगने हेतु विभिन्न योनियों में रहना पड़ा होगा। अब पुनः ईश्वर कृपा से मानव शरीर प्राप्त हुआ है। इस जीवन में भी हम जैसे कर्म करेंगे उसी के अनुरूप हमारा अगला जन्म होगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने भाग्य के निर्माता हम स्वयं

पूर्व जन्म, वर्तमान जन्म और पुनर्जन्म के सिद्धान्त को हमें मानना ही होगा। साथ ही कर्मफल भोगने की धारणा पर अटूट विश्वास भी रखना होगा। हमारा कोई भी कर्म निष्फल नहीं होता। देर-सबेर उसका फल हमें मिलता ही है। हम किसी को गाली दें, तो वह हमें थप्पड़ मारकर तुरंत बदला लेता है, यहाँ कर्म का फल तुरंत मिल गया। कुछ उल्टा-सीधा खा पी लें तो उसका फल कुछ दिनों या वर्षों बाद शरीर में रोग के रूप में फूटता है। इसी प्रकार कुछ कर्मों का फल इसी जीवन में मिल जाता है, जबकि कुछ का अगले जन्मों में। भगवान् के यहाँ देर है पर अंधेर नहीं।

भगवान् को हम किसी भी नाम से पुकारें, उसे निराकार मानें या साकार, पर यह तो मानना ही होगा कि सब कुछ उसी की कृपा से होता है। **ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्**- इस संसार में जो कुछ भी है, कण-कण में, रोम-रोम में, ईश्वर का वास है। वही सारे संसार का नियंता है, नियामक है। हम सारे संसार को भले ही धोखा दे लें पर भगवान् को धोखा नहीं दे सकते। हमारे कर्मों का फल तो हमें अवश्य ही भोगना पड़ेगा।

हमारे जीवन में जो भी अच्छी-बुरी परिस्थितियाँ आती हैं वे भी हमारे कर्मों का फल है। पूर्व जन्मों के कर्मों के अनुसार ही हमें इस जन्म में विभिन्न परिस्थितियों का सामना करना होता है। कोई अच्छे समृद्ध संस्कारी परिवार में जन्म लेता है, कोई दुराचारी या निर्धन परिवार में। किसी को अनेकानेक सुख-सुविधाएँ सरलता से उपलब्ध होती हैं, तो कोई सदैव अभाव व कष्ट में ही रहता है। इस सबके लिए हम किसी अन्य को दोष नहीं दे सकते। अब भी यदि हम खराब कर्म करते रहेंगे, तो अगले जन्म में हमें जीव-जंतुओं की न जाने कितनी योनियों में कष्ट भोगने पड़ेंगे और फिर से मनुष्य शरीर मिला तो संभव है कि उस समय और अधिक विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़े।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यदि अच्छे कर्म करेंगे तो अगले जीवन में और अधिक सुखद परिस्थितियाँ प्राप्त होंगी।

हमें ईश्वर के अस्तित्त्व और कर्मफल के सिद्धांत को सदैव ध्यान में रखना होगा। यदि हम इससे आँखें फेरने का प्रयास करेंगे तो केवल स्वयं को ही धोखा देते रहेंगे। फिर हम न तो स्वयं को पहचान पाएँगे और न धर्म के वास्तविक स्वरूप को।

यह मानव जीवन हमें कर्म करने के लिए मिला है। इस योनि में रहते हुए ही हम पूर्वजन्म के कर्मों के फल भी भोगते रहते हैं और साथ ही नए कर्म भी करते हैं। शेष सभी योनियाँ तो केवल भोग योनियाँ ही हैं। वहाँ तो कोई नया कर्म होता ही नहीं, मात्र सामान्य जीवनचर्या ही चलती रहती है। अब यह हमारे ऊपर है कि हम मानव जीवन प्राप्त कर किस प्रकार के कर्म करें। परमात्मा ने हमें एक सुअवसर प्रदान किया है कि सत्कर्म करते हुए हम अपने जीवन को उन्नति के मार्ग पर ले जाएँ। कुकर्मों द्वारा इसका सर्वनाश न करें। भगवान् ने हमें इस संसार में भेजा है, जिससे हम सभी प्राणियों के कल्याण हेतु अपनी प्रतिभा व क्षमता का नियोजन कर सकें। अपने पुरुषार्थ से अपने पाप कर्मों का प्रायश्चित भी करें और सत्कर्मों द्वारा पुण्यफल भी प्राप्त करें।

इस प्रकार हम स्वयं को पहचानें और पूर्ण आस्था व ईश्वर विश्वास के साथ कर्मपथ पर बढ़ें। हमें पग-पग पर ईश्वरीय सहायता भी मिलती रहेगी। ईश्वर केवल उन्हीं की सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करना चाहते हैं। हमें सतत सतर्क रहकर इसी विश्वास के साथ अपनी जीवनचर्या का निर्धारण करना होगा, तभी हम सफलतापूर्वक वर्तमान चुनौतियों से पार पा सकेंगे।

अपनी उलटी जीवनचर्या को पलट कर सीधा करें

आज अधिकांश व्यक्तियों का जीवन उलटी दिशा में चल रहा है। मनुष्य स्वकेंद्रित हो गया है। वह केवल अपने लाभ की बात ही सोचता है। अपनी इच्छाओं और कामनाओं की पूर्ति में लगा रहता है। स्वार्थ के आगे संयम तो स्वत: ही टूट जाता है। अमर्यादित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आचरण से भी उसे संकोच नहीं होता। स्वयं के बाद वह अपने परिवार की बात सोचता है। पति-पत्नी और बच्चों तक ही वह सीमित रह जाता है। आगे समाज व राष्ट्र के बारे में तो वह सोचता ही नहीं। होना तो यह चाहिए कि पहले राष्ट्र और समाज के कल्याण के कार्य करें और फिर अपने कुटुंब व परिवार के लिए। स्वयं का कल्याण को स्वत: ही हो जाएगा। जब इस प्रकार की भावना मन में आएगी तो मनुष्य कभी भी दुखी नहीं होगा चाहे कैसी भी समस्याएँ उसके सामने क्यों न आएँ। इस उलटे मार्ग पर हम इसीलिए चल पड़े हैं क्योंकि हमने 'पुरुषार्थ चतुष्टय' के महामंत्र को भुला दिया है।

पुरुषार्थ चतुष्टय का तात्पर्य है कि हमारा सारा पुरुषार्थ चार बिंदुओं धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पर आधारित हो। विद्वान मनीषियों ने गहन चिंतन-मनन के बाद हमारे कर्मों के लिए यह चार आधार निश्चित किए थे और इनका क्रम भी। उत्तम, चरित्रवान, सुसंस्कारित और परिष्कृत व्यक्तियों से युक्त समाज का निर्माण करने के लिए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की नसैनी हमें सौंपी थी।

धर्म उसकी पहली सीढ़ी है फिर अर्थ और काम, तब अंत में मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। आज हम धर्म को तिलांजलि देकर, अर्थ व काम में लिप्त होकर, मोक्ष की खोज में भटक रहे हैं। फिर चिरंतन सुख की प्राप्ति कैसे होगी? ऐसे में तो केवल अशांति और कुंठा ही हाथ लगेगी।

धर्म कोई उपासना पद्धति नहीं है। यह तो एक विराट् एवं विलक्षण जीवनचर्या है, जीवन जीने की कला है। ऋषि परम्परा द्वारा सिंचित, अवतारों एवं महापुरुषों द्वारा संरक्षित धर्म का महावृक्ष सनातन काल से पल्लवित एवं संवर्द्धित होता चला आ रहा है। इसमें 'स्व' का स्वार्थ नहीं है। इसकी छत्रछाया में समस्त विश्व 'जीवेत एवं जीवयेत' (जियो और जीने दो) के सिद्धांत का पालन करते हुए सुख शांति पूर्वक जीवनयापन का आनंद भोगता है। देश-विदेश में फैले अनेकानेक मत-मतांतरों, उपासना पद्धतियों,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर्मकांडों के सह अस्तित्त्व के साथ अपने सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों में उत्तरोत्तर वृद्धि करना ही धर्म का मूल उद्देश्य है। इसी को हिंदुत्व भी कहते हैं। धर्म ही मानव के समस्त क्रिया-कलापों को संचालित करके संपुष्ट समाज रचना को आलंबन प्रदान करता है। व्यक्ति, परिवार, समाज या राष्ट्र जब भी धर्म से परे हटकर अधर्म के कार्यों में लिप्त हो जाते हैं, वह अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारने का कार्य ही करते हैं।

धर्म का अर्थ है कर्त्तव्य। मनुष्य का मनुष्य के प्रति कर्त्तव्य, अन्य प्राणियों के प्रति कर्त्तव्य, पेड़-पौधों व पर्यावरण के प्रति कर्त्तव्य, समाज और राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य। पूरी निष्ठा व ईमानदारी से, नि:स्वार्थ भाव से अपने कर्त्तव्य का पालन करना ही सच्चा धर्म है। यही मानव धर्म है। हिंदू हो या मुसलमान, सिख हो या ईसाई, पारसी हो या यहूदी, यह तो सभी के लिए समान है।

धर्म के बाद दूसरा स्थान **अर्थ** का है। अर्थ के बिना, धन के बिना संसार का कार्य चल ही नहीं सकता। जीवन की प्रगति का मूल आधार ही धन है। उद्योग-धंधे, व्यापार, कृषि आदि सभी कार्यों के निमित्त धन की आवश्यकता होती है। यही नहीं, धार्मिक कार्यों, प्रचार, अनुष्ठान आदि सभी धन के बल पर ही चलते हैं। अर्थोपार्जन मनुष्य का पवित्र कर्त्तव्य है। इसी से वह प्रकृति की विपुल संपदा को अपने और सारे समाज के लिए प्रयोग भी कर सकता है और उसे संवर्द्धित व संपुष्ट भी। पर इसके लिए धर्माचरण का ठोस आधार आवश्यक है। धर्म से विमुख ओकर अर्थोपार्जन में संलग्न मनुष्य एक ओर तो प्राकृतिक संपदा का विवेकहीन दोहन करके संसार के पर्यावरण संतुलन को नष्ट करता है और दूसरी ओर अपने क्षणिक लाभ से दिग्भ्रमित होकर अपने व समाज के लिए अनेकानेक रोगों व कष्टों को जन्म देता है। यही सब तो आजकल हो रहा है। धर्म ने ही हमें यह मार्ग सुझाया है कि प्रकृति से, समाज से हमने जितना लिया है, अर्थोपार्जन करते हुए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उससे अधिक वापस करने को सदैव प्रयासरत रहें। हमारी यज्ञ परंपरा भी इसी उत्कृष्ट भावना पर आधारित है।

धर्म और अर्थ के बाद **काम** को तीसरा स्थान दिया गया है। काम को धर्म और अर्थ दोनों पर ही आश्रित होना चाहिए। काम तो जीवन की प्राण-शक्ति है। यदि मनुष्य में कामना ही नहीं होगी, कुछ करने व पाने की लालसा नहीं होगी, तो वह मृतप्राय हो जाएगा। प्रगति का चक्र ही रुक जाएगा। कामेच्छा से प्रेरित होकर ही मनुष्य तरह-तरह के आविष्कार करता है, भौतिक सुख के साधन तैयार करता है और इसी से बहुमुखी प्रगति के दर्शन होते हैं। परंतु हमारे धर्मग्रंथों ने 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा' का मंत्र भी तो हमें दिया है। त्याग भाव से भोग करो। संसार में जो कुछ भी है समाज के लिए है। धर्मानुसार, विवेकपूर्ण चिंतन के आधार पर ही उसका उपभोग करो। पहले त्याग करो, अन्य सभी का ध्यान रखो फिर स्वयं उपभोग करो। दूसरों को खिलाकर तब स्वयं खाओ। काम को, अपनी इच्छाओं व लालसाओं को सब से ऊपर समझकर उनके भार से समाज को जर्जर मत बनाओ अन्यथा अंततोगत्वा यह तुम्हारे ही संहार का कारण बनेगा।

मोक्ष का स्थान अंत में आता है। यह हमें तभी प्राप्त हो सकेगा जब हमारा अर्थ व काम दोनों ही धर्म से संचालित होंगे। तभी चारों ओर सुख-शांति का साम्राज्य होगा। धर्मानुसार आचरण न करने पर हमें अर्थ-सुख तो मिल सकता है, पर मन के कलुष व अशांति के अतिरेक में मोक्ष कहाँ मिलेगा? बाह्य दृष्टि से हम भले ही धन-धान्य, वैभव व संपन्नता से परिपूर्ण दिखाई दें परंतु अनगढ़, असभ्य और असंस्कृत होने से हम आर्थिक दृष्टि से भी कहीं अधिक घाटे में रहते हैं। दरिद्रता वस्तुतः असभ्यता की प्रतिक्रिया मात्र ही है। आलसी, प्रमादी, दुर्गुणी, दुर्व्यसनी मनुष्य या तो उचित अर्थोपार्जन कर ही नहीं पाते और यदि कुछ अर्जित भी कर लेते हैं तो उसे नशेबाजी व अन्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

फिजुलखर्चियों में नष्ट कर देते हैं। मन में हर समय अशांति व भय बना रहता है। ऐसे में मोक्ष की कल्पना रात्रि में सूरज की खोज के समान है।

आज मनुष्य के मानसिक संताप तथा समाज में व्याप्त अनेकानेक बुराइयों, आधि-व्याधियों का मूल कारण ही यह है कि हमने 'पुरुषार्थ चतुष्टय' की इस स्वर्ण नसैनी को खंडित कर दिया है, उसकी पवित्रता भंग कर दी है। धर्म के वास्तविक शाश्वत स्वरूप को तिलांजलि दे दी है। धर्म विमुख होने से हमारे समस्त क्रिया-कलाप हमें पतन के गर्त में ही ले जा रहे हैं। स्वस्थ, संपुष्ट एवं समरस समाज की पुनर्स्थापना करने हेतु धर्म का ठोस आधार हमें अपनाना ही होगा। उसी से समाज का और हमारा स्वयं का भी कल्याण संभव होगा। युवाओं के महानायक स्वामी विवेकानन्द जी का यही संदेश है, यही निर्देश है।

पुरुषार्थ चतुष्टय की मूल भावना को समझकर ही हम अपनी उलटी जीवनचर्या को सही मार्ग पर ले जा सकते हैं।

लक्ष्य निश्चित करें

हमने यह समझ लिया है कि हमें यह मानव जीवन क्यों मिला है। जीवन में हमें जैसी भी परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है वह सब हमारे कर्मों का ही फल है। अब भी हम जैसे कर्म करेंगे उनका फल भी हमें ही भोगना होगा। हमने यह भी जान लिया है कि धर्म का वास्तविक स्वरूप क्या है और हमारे सारे क्रिया-कलाप धर्मानुसार ही होने चाहिए।

इसी आधार पर हमें अपने जीवन का लक्ष्य निश्चित करना होगा। आज तो लगभग सभी ने पैसा कमाना ही अपने जीवन का एकमात्र ध्येय बना रखा है। युवावर्ग में शिक्षा का उद्देश्य भी धन कमाना ही रह गया है। शिक्षा की वास्तविक उपयोगिता तो इसमें है कि हमारा ज्ञान बढ़े, हमारी प्रतिभा व क्षमता का विकास हो और हम इसके द्वारा समाज का एवं स्वयं का भला कर सकें, पर आज शिक्षा का व्यवसायीकरण हो रहा है। लोग डॉक्टर व इंजीनियर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भी इसीलिए बनना चाहते हैं कि उसमें अधिक से अधिक धन कमाने की संभावना होती है। ऐसी शिक्षा से क्या लाभ? धन तो अशिक्षित व्यक्ति भी कमा लेता है। चोरी, डकैती, स्मगलिंग, अपहरण आदि के द्वारा कम समय में ही मनचाही राशि लोग एकत्रित कर लेते हैं। जब किसी भी प्रकार से धन कमाना ही मुख्य ध्येय है तो फिर चोर-डकैत और डॉक्टर इंजीनियर में क्या अंतर रह जाता है? ध्येय का महत्त्व शिक्षा से कहीं अधिक है। यदि ध्येय उचित है, सारे समाज के भले का है, जन कल्याण के लिए है तो वह व्यक्ति वंदनीय है, पूजनीय है।

अपने जीवन का लक्ष्य निश्चित करते समय हमें सुभाष, गांधी, विवेकानंद, दयानंद, सरदार पटेल, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, राजगुरु, सुखदेव जैसे महान् युवा क्रांतिकारियों से प्रेरणा लेनी चाहिए। एक बार भली-भाँति ठोक-बजाकर अपना लक्ष्य निर्धारित कर लें। लक्ष्य जितना ऊँचा होगा, उपलब्धि भी उतनी ही ऊँची होगी। एक बार लक्ष्य के निर्धारित होने पर फिर इसे भूलें नहीं। दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ उस पथ पर बढ़ चलें। मार्ग में अनेक अड़चनें आएँगी, विरोधी भाँति-भाँति की समस्याएँ उत्पन्न करेंगे, पर यदि आपका संकल्प दृढ़ है तो सारी उलझनें धीरे-धीरे समाप्त हो जाएँगी। धैर्यपूर्वक अपने पथ पर बढ़ते रहें। असफलताएँ आएँगी, पुनः प्रयास करें, पुनः पुनः प्रयास करते रहें, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाय। 'उत्तिष्ठीत् जाग्रत् प्राप्य वरान्निबोधत्'- इसे अपना ध्येय वाक्य बना लें। कठिनाइयों से, असफलताओं से कभी घबराएँ नहीं। जीवन में जितनी अधिक कठिनाइयाँ आती हैं, जितनी समस्याएँ आती हैं, हमारे अंतरमन में उनसे जूझने की क्षमता भी उसी अनुपात में बढ़ती जाती है। यदि हमारा आत्मविश्वास और ईश्वर विश्वास दृढ़ है तो कोई भी अवरोध अधिक समय तक टिक ही नहीं सकता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साधना, संयम, स्वाध्याय, सेवा

अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, मार्ग में आने वाले अवरोधों पर विजय पाने के लिए साधना, संयम, स्वाध्याय और सेवा का अभ्यास करें। इस प्रकार आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से किसी भी विकट समस्या का सामना करने के लिए स्वयं को तैयार कर सकेंगे। जिस प्रकार एक सैनिक सतत अभ्यास के द्वारा युद्ध के लिए स्वयं को सदैव तैयार रखता है, चाहे युद्ध की संभावना हो या न हो, उसी प्रकार हमें भी स्वयं को जीवन-संग्राम के लिए तैयार रखना चाहिए।

स्वयं को इस प्रकार तैयार करने का नाम ही **साधना** है। आलस व प्रमाद छोड़कर नियमित दिनचर्या रखें। शारीरिक स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहें। बाहरी पवित्रता के साथ-साथ वैचारिक पवित्रता पर विशेष बल दें। मन में बुरे विचारों का 'प्रवेश निषेध' कर दें। किसी के प्रति ईर्ष्या, द्वेष, दुर्भावना, क्रोध आदि के विषधर यदि सिर उठाएँ तो उन्हें तुरंत कुचल दें। युवाओं की तो सबसे बड़ी साधना है अपनी योग्यता का विकास करना। अनुचित साधनों से लोग डिगरियाँ व उपाधियाँ तो पा सकते हैं पर इससे उनमें ज्ञानवृद्धि नहीं हो पाती। इसी से आगे चलकर वे जीवन संग्राम में मुँह की खाते हैं।

संयम के बिना साधना तो संभव ही नहीं है। अपनी इंद्रियों पर कठोर नियंत्रण रखें। ये इंद्रियाँ यदि अपने वश में हों तो सर्वश्रेष्ठ सहयोगी की भूमिका निभाती हैं और यदि स्वच्छंद हो जाएँ तो जीवन को नरकतुल्य बना देती हैं। इंद्रियों का स्वामी मन तो और भी अधिक उत्पाती होता है। न जाने कहाँ-कहाँ हमें भटकाता रहता है और हमारी ऊर्जा को व्यर्थ ही नष्ट कराता है। किसी कवि ने मानव मन के बारे में लिखा है-

मौन हिलोर किधर से आती, कब आती, क्यों आती।
कौन जानता पर वह नर को, कहाँ-कहाँ ले जाती॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस मन पर नियंत्रण सबसे आवश्यक पुरुषार्थ है। यही हमारी इंद्रियों को भी भड़काता रहता है। स्वार्देंद्रियों का संयम हमारे स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। जवानी के जोश में हम न जाने क्या-क्या उलटा-सीधा खाते पीते रहते हैं। आरंभ में तो पता नहीं चलता, पर आयु बढ़ने के साथ, ४०-४५ वर्ष की आयु से शरीर में अनेकानेक रोग फूटने लगते हैं। युवाओं को इस पर विशेष सतर्कता बरतनी चाहिए। ब्रह्मचर्य का पालन अवश्य ही करना चाहिए।

साधना और संयम द्वारा अपने शरीर और मन को हम हर प्रकार की समस्याओं का सामना करने हेतु भली-भाँति तैयार कर सकते हैं। इसमें **स्वाध्याय** से हमें बहुत सहायता मिलती है। प्रेरक आदर्श साहित्य अंधेरे में प्रकाश किरण के समान होता है। अच्छी पुस्तकों के अध्ययन से तत्काल प्रकाश और उल्लास मिलता है। उनकी आराधना देव प्रतिमाओं के समान करनी चाहिए। स्वाध्याय का एक अर्थ यह भी है कि हम स्वयं का अध्ययन करें। आत्मसमीक्षा करते रहने से हमें यह ज्ञात होता रहता है कि हमारे भीतर कौन-कौन दोष व दुर्गुण हैं। यह जानकर आत्मपरिष्कार करते रहना चाहिए। यदि यह कार्य सतत होता रहे तो हम अनेकानेक बुराइयों से बचे रह सकते हैं। प्रतिदिन सोते समय अपने दिन भर के कार्यों की समीक्षा तो हमें अवश्य ही करनी चाहिए।

साधना, संयम और स्वाध्याय द्वारा अपने व्यक्तित्व का विकास करते हुए सदैव दूसरों की **सेवा** की भावना ही मन में रखें। परोपकार को जीवन का मूल उद्देश्य समझें। हमारे पास जो भी प्रतिभा और क्षमता है, जो भी धन-संपत्ति है, सब हमने समाज के सहयोग से ही अर्जित की है। समाज के इस उपकार का बदला चुकाना हमारा कर्त्तव्य है। निर्बल, निर्धन, पीड़ित लोगों की सेवा में तन-मन-धन से सदैव तत्पर रहें। अपनी कमाई का एक भाग, कम से कम दस प्रतिशत, इस हेतु अवश्य लगाएँ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संस्कारवान बनें

एक अच्छे संस्कारित, चरित्रवान व्यक्ति के रूप में अपना विकास आप स्वयं ही कर सकते हैं। माता-पिता का, शिक्षकों का और समाज का मार्गदर्शन तो आपको मिल सकता है, पर इस मार्ग पर चलना तो आपको ही पड़ेगा। संयम और साधना के द्वारा अच्छे संस्कारों का अभ्यास करें। इस कुसंस्कारी समाज में लोग आपका विरोध करेंगे पर इसकी चिंता न करें। लोग क्या कहेंगे, इस पर ध्यान न दें और अपने निश्चित पथ पर बढ़ते रहें। जैसी भी परिस्थितियाँ हों, उनका डटकर सामना करें। मनुष्य परिस्थितियों का दास नहीं है, वह उनका निर्माता, नियंत्रणकर्त्ता और स्वामी है। जो विपरीत परिस्थितियों में भी ईमान, साहस और धैर्य को कायम रख सके वस्तुतः वही सच्चा शूरवीर होता है। संस्कारी व्यक्ति की यही पहचान है।

संस्कारवान व्यक्ति ही समाज के समक्ष आई चुनौतियों का सरलता से सामना कर सकता है। वही सच्चा मनुष्य कहलाता है। मनुष्य का जन्म तो सरल है पर मनुष्यता उसे कठिन प्रयत्न से प्राप्त करनी होती है। जो अपने को मनुष्य बनाने में सफल हो जाता है उसे हर काम में सफलता मिल सकती है। ऐसा व्यक्ति अपनी निजी आवश्यकताओं को कम से कम रखता है और हर हाल में प्रसन्न रहता है। संस्कारित, सदाचारी और कर्त्तव्यपरायण व्यक्ति को ईश्वर भी बहुत प्यार करता है और हर प्रकार से उसकी सहायता करता रहता है। प्रत्यक्षतः वह आपको भले ही दिखाई न दे, पर न जाने किस-किस रूप में वह आपकी सहायता के साधन जुटा देता है।

गलतियों पर स्वयं को दंडित करें

गलतियाँ मनुष्यों से ही होती हैं। बच्चे-बूढ़े, छोटे-बड़े सभी जीवन में समय-समय पर गलतियाँ करते रहते हैं। दूसरों की गलतियों पर हम बहुत जल्दी उत्तेजित हो जाते हैं और उन्हें दंड

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देने को तत्पर रहते हैं। पर स्वयं अपनी गलतियों पर परदा डालते हैं। कहीं कोई हमें दंडित न कर दे, इसके लिए बचने के हर संभव प्रयास करते हैं। इसमें सफल भी हो जाते हैं। यही कारण है कि हम बार-बार गलतियाँ करते रहते हैं और उनके आदी भी हो जाते हैं।

हमें स्वयं को अपनी गलतियों पर दंडित करने का स्वभाव विकसित करना चाहिए। कोई दूसरा हमें दंड दे इससे पहले ही स्वयं अपने कान खींचें, गाल पर थप्पड़ लगाएँ और अपने को डाँटें कि अजब मूर्ख हो जो ऐसी गलती करते हो। यदि अपराध अधिक गंभीर हो तो स्वयं अपने को एक समय या पूरे दिन भूखा रहने का दंड दें। इसी प्रकार हम स्वयं ही न्यायाधीश के समान अपनी गलती की गंभीरता को देखते हुए दंड निर्धारित कर लें और कठोरता से उसका पालन करें। इसे प्रायश्चित भी कहते हैं। इससे एक ओर तो परिवार व समाज में हमारा मान बढ़ता है वहीं दूसरी ओर आत्मसंतोष होता है, अपराध बोध से मुक्ति मिलती है और परमात्मा के दण्ड से छुटकारा भी होता है।

वर्तमान चुनौतियों में युवाओं से एकाकी साहस की अपेक्षा

संसार की चुनौतियों का सामना करने को तुम्हें अकेले ही आगे बढ़ना होगा। संभव है कि आगे चलकर और लोग भी सहयोग करने को आ जाएँ, पर उसके लिए प्रतीक्षा करने में समय नष्ट करना बुद्धिमानी नहीं है। अपने पौरुष, अपने साहस और अपने विवेक पर भरोसा रखो, तथा परमात्मा की कृपा पर अटूट विश्वास भी। सत्य के लिए, धर्म के लिए, न्याय के लिए एकाकी आगे बढ़ने को सदैव तैयार रहो।

सफलता का मार्ग खतरों का मार्ग है। इन खतरों से जूझने का, कष्ट सहने का, कठोर परिश्रम करने का साहस तुम्हें हर दशा में सफल बनाएगा। तभी राष्ट्र की वर्तमान चुनौतियों का भी सफलतापूर्वक सामना कर सकेंगे। विश्वक्रांति एवं सांस्कृतिक सद्भाव का संवाहक देश आज आतंकवाद एवं उग्रवाद के विस्फोटों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से ग्रस्त है। जातीय-सांप्रदायिक हिंसा देश की अस्मिता के लिए खतरा बनी हुई है। समूचा राष्ट्र भ्रष्टाचार में आकंठ डूबा है। कभी सोने की चिड़िया के नाम से विश्वविख्यात् देश आज विदेशियों के सामने भिक्षापात्र लेकर भटक रहा है। पूरा समाज आज नेतृत्वविहीन है। राजनीति भ्रष्टाचार एवं अपराध का पर्याय बन गयी है। लोकतंत्र की व्यवस्था एक उपहास मात्र बनती जा रही है। राष्ट्र निर्माण का लक्ष्य एक अंधेरी गली में गुम सा हो गया है। राष्ट्र व्यापी असंतोष, अव्यवस्था आज देश की रुग्ण स्थिति को दर्शा रही है।

ऐसी विषम स्थिति से जूझने की सामर्थ्य, ऐसे उल्टे प्रवाह को उलटकर सीधा करने का साहस, समवेत स्वर में 'युवाशक्ति' के बल पर ही संभव है। सभी इस बारे में एक मत हैं कि युवाओं में प्रचंड ऊर्जा है भले ही आज वह दिशाहीनता की वजह से बिखर रही है। आज के राष्ट्रीय एवं सामाजिक परिवेश में युवा शक्ति से ही यह अपेक्षा की जा सकती है कि वह राष्ट्र को इस विकट स्थिति से उबारकर इसमें नयी चेतना का संचार कर सकेंगे।

स्वतंत्रता संघर्ष की सूत्रधार युवा शक्ति

हमेशा राष्ट्रीय गौरव की सुरक्षा के लिए युवाओं ने ही अपने कदम बढ़ाए हैं। संकट चाहे सीमाओं पर हो अथवा सामाजिक एवं राजनैतिक इसके निवारण के लिए अपने देश के युवक एवं युवतियों ने अपना सर्वस्व न्यौछावर करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी है। देश के स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास भी इसका साक्षी है। १८५७ से १९४७ तक के लम्बे स्वतंत्रता संघर्ष में देशवासियों के हृदय में राष्ट्रभक्ति एवं क्रांति के भावों का आरोपण करने वालों में युवाओं की भूमिका सर्वोपरि रही है। १८५७ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के महानायकों में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, ताँत्याटोपे और मंगल पाण्डे युवा थे। रानी लक्ष्मीबाई तब मात्र २६ वर्ष की थीं। अंग्रेजों के दाँत खट्टे करने वाली लक्ष्मीबाई की सेना की एक जाँबाज झलकारी बाई एक युवती ही थी। उन्हीं की प्रेरणा से सुंदर,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मुंदर, जुही, मोतीबाई जैसी नृत्यांगनाएं क्रांति की वीरांगनाएं बन गयी थीं, जिनका जीवन घुँघरुओं की झंकार से शुरु होकर गोले-बारूद के धमाकों में खत्म हुआ।

पश्चिम बंगाल में युवाओं को क्रांति के बलिदान मंच पर लाने वाले श्री अरविंद तब एक २५-३० वर्षीय युवा ही तो थे। उस जमाने की सर्वोच्च आई. सी. एस. परीक्षा को ठुकरा कर, राष्ट्रप्रेम से आप्लावित होकर वह राष्ट्र जागरण के महायज्ञ में कूद पड़े थे। कर्मयोगिन् एवं वन्देमातरम् जैसी क्रांतिकारी पत्रिकाओं के माध्यम से देश के युवकों में राष्ट्रीय स्वाभिमान एवं क्रांति की भावना को जगाकर राष्ट्रभक्ति से भर दिया था। सैकड़ों युवक इस प्रेरणा से हँसते-हँसते फाँसी के तख्ते पर चढ़ गए थे। १९०८ ई. में स्वाधीनता यज्ञ की बलिवेदी पर शहीद होने वाले खुदीराम बोस मात्र १८ वर्षीय किशोर थे। फाँसी के फंदे पर चढ़ने से पूर्व उनके उद्‌गार थे-

हाँसी-हाँसी चाड़बे फाँसी, देखिले जगत्‌वासी,
एक बार विदाय दे माँ, आमि धूरे आसी।

अर्थात् दुनिया देखेगी कि मैं हँसते-हँसते फाँसी के फंदे पर चढ़ जाऊँगा। हे भारत माता ! मुझे विदा दो, मैं बार-बार तुम्हारी कोख में जन्म लूँ।

काकोरी कांड स्वतंत्रता इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना रही है। १९२५ ई. में हुए इस कांड के सभी क्रांतिकारी अभियुक्त युवा थे। अपने साहस एवं सहर्ष आत्मबलिदान के भाव से उन्होंने देशवासियों के हृदय में राष्ट्रप्रेम की लौ लगा दी थी। इनमें प्रमुख क्रांतिकारी अभियुक्त पं. रामप्रसाद विस्मिल ने फाँसी के फन्दे चूमते हुए कहा था-

अब न कोई बलबले हैं, और न अरमानों की भीड़,
एक मिट जाने की हसरत, अब दिले विस्मिल में है।

अन्य क्रांतिकारी अभियुक्त अमर शहीद अशफाक उल्ला खाँ, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, रोशन सिंह आदि सभी युवा ही थे। अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अप्रतिम देशप्रेम एवं आत्मबलिदान द्वारा देश भर में क्रांति की नयी लहर फैलाने वाले शहीद ए- आजम भगतसिंह उस समय मात्र २३ वर्ष के थे। उनके क्रांतिकारी साथी राजगुरु एवं सुखदेव भी युवा ही थे। इसके अलावा अगणित गुमनाम युवाओं ने स्वतंत्रता संग्राम महायज्ञ में अपनी आहुति दी थी। १९४२ के भारत छोड़ो आंदोलन के समय भी युवाशक्ति अपने चरम पर उभर कर आगे आयी थी व राष्ट्रशक्ति का पर्याय बनी थी।

विश्व इतिहास की महान् क्रांतियों में युवा शक्ति

भारत ही नहीं विश्व भर में जितने भी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं, जितनी भी सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनैतिक क्रांतियाँ हुई हैं, इनमें युवा भावनाएँ ही काम करती रही हैं। थोड़े से प्रबुद्ध युवाओं ने समय की माँग को समझा तो स्वार्थ एवं विलासिता को ठोकर मारकर कुछ हजार भिक्षु उठ खड़े हुए और देखते ही देखते बौद्ध धर्म का प्रसार सारे एशिया में हो गया। २००० वर्षों में विश्व की एक तिहाई जनता को ईसाई धर्म में दीक्षित करने का श्रेय ईसा के कुछ प्रबुद्ध युंवा शिष्यों को जाता है। मार्क्स जब मरा था तो उसे दफनाने के लिए सिर्फ ५-१० व्यक्ति ही गए थे। पर जब प्रबुद्ध युवाओं ने उसके विचारों का महत्त्व समझा तो विश्व का एक बहुत बड़ा भाग साम्यवादी हो गया।

सही तो यह है कि किसी देश का निर्माण वहाँ की युवाशक्ति के नियोजन पर ही हुआ है। अमेरिका आज विश्व का सबसे समृद्ध एवं सशक्त राष्ट माना जाता है। वहाँ के सामाजिक, आर्थिक, कानूनी, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक क्षेत्र में जो तीव्र परिवर्तन हुए हैं उनका इतिहास बहुत पुराना नहीं है। १९१० ई. में अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन में कुल नौ व्यक्ति सरकारी अनुसंधान संस्थान की रूपरेखा लेकर एकत्रित हुए थे। उन्होंने बुकिंग इन्स्टीट्यूट नामक संस्था की स्थापना की। इसका उद्देश्य अमेरिका के कानूनी, प्रशासन, शिक्षा एवं विज्ञान के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन लाना था। इन क्रांतिकारी कार्यक्रमों को बुकिंग इन्स्टीट्यूट ने केवल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यवस्थित ढाँचा देकर प्रकाशित किया, लेकिन इसे उभारा वहाँ के प्रबुद्ध युवाओं ने। इस अभियान ने अमेरिका में बौबवुड, जौन गार्डनर, चालीडोर जैसे कर्मठ एवं प्रभावशाली व्यक्ति पैदा किए। इनके कार्यक्रमों से कोई व्यक्ति अछूता न रहा और ऐसी आँधी आयी कि कानूनी मामले ही नहीं, सामाजिक रहन-सहन और राष्ट्रीय प्रगति में ठोस परिवर्तन हुए। अमेरिका की वर्तमान प्रगति का इतिहास वहाँ के प्रबुद्ध युवाओं के पसीने से लिखा हुआ है।

एक समय की विश्वशक्ति सोविसत रूस की प्रगति का इतिहास भी युवा शक्ति की असंदिग्ध भूमिका को स्पष्ट करता है। विखंडित सोवियत रूस की वर्तमान स्थिति जो भी हो, १९२० से १९६० तक के चार दशकों की अद्‌भुत प्रगति का इतिहास अपने में युवाशक्ति की मिसाल कायम किये हुए हैं। इस शताब्दी के प्रारंभ में वहाँ की तीन-चौथाई से भी अधिक जनता अशिक्षित व निर्धन थी। वैज्ञानिक क्षेत्र में देश बिल्कुल पिछड़ा हुआ था। एकाएक जो परिवर्तन की लहर आयी, वह युवाओं की सुव्यवस्थित क्रांति की परिणति थी। इसके पीछे युवाशक्ति के अथक श्रम, त्याग, लगन का एक चमकता अध्याय जुड़ा हुआ है।

सन् १९२० से १९६० के चार दशकों में वहाँ अकेले शिक्षा के क्षेत्र में जो क्रांति हुई उसका लेखा-जोखा प्रस्तुत करते हुए विद्वान रूसी लेखक ए.पुल्को ने एक स्थान पर बताया है कि १९२० में १० लाख लोगों में केवल ३००० व्यक्ति ऐसे थे, जिन्होंने उच्चतर शिक्षा प्राप्त की थी। इसके बाद युवकों के माध्यम से सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली का संगठन हुआ और देश में अकाल, विनाश की परिस्थितियों के बीच भी निरक्षरता उन्मूलन के कार्यक्रम गाँवों में, कस्बों, निवासगृहों एवं औद्योगिक संस्थाओं में स्थापित किये गए। इस शिक्षा क्रांति का उद्‌देश्य राष्ट्र में वैज्ञानिकों, लेखकों और कलाकारों की आवश्यकता पूर्ति करना भी था। इस आंदोलन में लेनिन, कोन्सतान्तिन त्सियोल्कीवस्को एवं इवान पावलोव जैसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अगुआ थे। लेकिन इस शिक्षा-क्रांति के प्रचार-प्रसार में अथक श्रम व त्याग करने वाली शक्ति युवाओं की ही थी। परिणामत: १९४० में १,१०,००० और १९६० में ३,३४००० तक उच्चशिक्षितों की संख्या पहुँची, इन्हें विशेषज्ञ स्नातक कहा गया।

क्यूबा एक छोटा सा देश है। उसकी शक्तियाँ भी उसी के अनुपात में सीमित हैं। लेकिन वहाँ के प्रबुद्ध युवाओं ने अद्‌भुत शिक्षा क्रांति करके स्वयं में एक नया इतिहास रच दिया। वहाँ जितने पढ़े-लिखे लोग थे, वे अशिक्षितों को ढूँढ-ढूँढकर पढ़ाने लगे। निरक्षरता को क्यूबा से निर्वासित करने का श्रेय जाता है वहाँ के युवाओं को। चीन व जापान में भी वहाँ के राजनैतिक परिवर्तन एवं सामाजिक सुधार का श्रेय वहाँ की युवा पीढ़ी को ही जाता है।

नवनिर्माण का आधार-आदर्शनिष्ठ युवाशक्ति

इस तरह समाज की कुंठाओं को काटने, उसे प्रगतिगामिता से उबारने, उसका कायाकल्प कर उसे नया जीवन देने में यदि कोई समर्थ हो सकते हैं तो वे प्रबुद्ध एवं भावनाशील युवक-युवतियाँ ही हैं। उन्हें छोड़कर या उनके बिना कोई भी सुधार या क्रांतिकारी परिवर्तन लाना संभव नहीं है। समय की आवश्यकता यही है कि वे अपने हृदय में समाज निर्माण की कसक उत्पन्न करें व अपनी बिखरी शक्तियों को एकत्रित कर समाज की विभिन्न समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न करें। देश की प्रगति में ही अपनी प्रगति और उन्नति सन्निहित है। इस उदात्त दृष्टिकोण के आधार पर ही युवाशक्ति, राष्ट्रशक्ति बनकर राष्ट्र को समृद्धि, उन्नति व प्रगति के मार्ग पर ले जा सकती है।

कितने ही देशों के उदाहरण हैं, जिन्होंने द्रुतगति से प्रगति की है। जापान, कंबोडिया, डेनमार्क, चीन, क्यूबा जैसे देश कल-परसों तक घोर विपन्नता में घिरे हुए थे, पर देश की प्रतिभाओं एवं युवा पीढ़ी ने थोड़े समय के लिए अपने स्वार्थों को त्याग कर देश के विकास का संकल्प लिया। उनका संकल्प सामूहिक पुरुषार्थ के रूप में फलीभूत हुआ और कुछ ही दशकों में ये राष्ट्र भौतिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समृद्धि की दृष्टि से संपन्न राष्ट्रों की श्रेणी में पहुँच गए। यह चमत्कार युवाशक्ति एवं प्रतिभाशाली लोगों के मुक्तहस्त सहयोग से ही संभव हुआ। ऐसी राष्ट्रीय भावना का अकाल देश की नयी पीढ़ी में पड़ता जा रहा है। हर सुशिक्षित युवा अपनी योग्यता की कीमत तत्काल पैसे के रूप में पाना चाहता है। उच्च शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य भी धनोपार्जन तक सिमट कर रह गया है। अधिकांश युवकों-युवतियों की यह मान्यता बन गयी हैं कि उन्हें अपनी योग्यता को पैसे के रूप में भुनाने का मनमाना अधिकार है। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से समाज एवं देश का भी ऋण उनके ऊपर चढ़ा है। उसे भी चुकाने का प्रयत्न करना चाहिए, ऐसा विरले ही सोचते हैं।

उल्लेखनीय है कि किसी देश का विकास, बहुसंख्यक भीड़ के सहारे नहीं बल्कि मूर्धन्य प्रतिभाओं के सहारे होता है। इनके सहयोग की मात्रा जितनी अधिक होगी, समाज-देश में प्रगति भी उतनी ही तीव्रगति से होगी। आज बड़े दुख की बात है कि अधिक धन एवं सुख-सुविधा के लोभ में देश की युवा प्रतिभाएं विदेशों में अपना रैन-बसेरा बसाने के लिए आतुर हैं जबकि इन घड़ियों में शताब्दियों के विदेशी प्रभुत्व और निष्क्रियता के बाद देश एक नए पुनर्जागरण और नियति की ओर अग्रसर हो रहा है। यों तो किसी भी देश के नव निर्माण में ज्ञान एवं युवाशक्ति का योगदान सदा ही रहा है। किंतु किसी भी काल में यह इतना महत्त्वपूर्ण नहीं रहा होगा, जितना कि आज के इस वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी के युग में और न ही यह इतना चुनौतीपूर्ण और अनिवार्य रहा होगा, जितना कि इन दिनों हमारे अपने देश में है। इन क्षणों में प्रत्येक युवा को जो महान् पाठ सिखाना है, वह है परिश्रम, त्याग और प्रत्येक व्यक्ति को सबके हित में कार्य करने का पाठ।

जीवन के आधारभूत मूल्य-सत्य की खोज, भावनात्मक एकता, आदर्श आदि ऐतिहासिक स्मारकों के रूप में अथवा पाठ्यपुस्तकों में अंकित करके दीर्घकाल तक सुरक्षित नहीं रखे जा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकते। उच्च आदर्श और महान् उद्देश्य तब तक अर्थहीन हैं, जब तक हम भावना में भरकर अनवरत रूप से उसके लिए प्रयत्न नहीं करते। राष्ट्रीय स्वाधीनता के पचपन वर्ष पूरे होने के अवसर पर प्रत्येक युवा को परिश्रम, त्याग और समर्पण के द्वारा राष्ट्र के पुनर्निमाण, पुनर्जीवन और नवीनीकरण का संकल्प करना होगा अन्यथा आदर्श और मूल्य निस्तेज और नष्ट हो जायेंगे एवं उद्देश्य धूमिल पड़ जाएगा।

युवाशक्ति को भारत माता का आह्वान

राष्ट्रनायक पं. जवाहर लाल नेहरू ने भारतमाता की प्रत्येक युवा संतान को संबोधित करते हुए कहा था-'यदि तुम वर्तमान परिस्थिति से असंतुष्ट नहीं हो, यदि तुम इस ललक का अनुभव नहीं करते जो तुम्हें अधीर बना दे तथा कर्म के प्रति प्रेरित तथा बाध्य करे, तब तुम वृद्धजनों के उस समूह से भिन्न कहाँ हो, जो वार्ता, वाद-विवाद और तर्क अधिक करते हैं और काम कम ? जब यह दिखाई पड़ता है कि तुममें राष्ट्र की वर्तमान परिस्थिति के प्रति सच्चा भाव है, जिज्ञासा की उत्साहपूर्ण भावना है, क्या करना है, कैसे करना है ? को जानने की आकाँक्षा है, तब इस बात का विशेष महत्त्व है।'

राष्ट्र के प्रत्येक युवा का वर्तमान परिस्थितियों में यही कर्त्तव्य है कि वह अपनी पुरातन संस्कृति से ओतप्रोत अपनी मातृभूमि के उत्थान के लिए कार्य करने वाली वीर संतान बने। वृद्ध लोग सीमित समय के लिए कार्य करते हैं और युवा अनंत समय के लिए। ध्यान रहे सीधे लक्ष्य की ओर बढ़ना है, कमर सीधी कर, दृढ़ होकर अपनी जमीन, अपनी अस्मिता को दृढ़ता से पकड़कर ऊँचे आकाशवत् आदर्शों को देखना है। तभी राष्ट्र निर्माण के लिए सार्थक प्रयास हो सकेंगे।

यौवन इस बात पर निर्भर नहीं है कि हम कितने छोटे हैं, बल्कि इस पर कि हममें विकसित होने की क्षमता एवं प्रगति करने की योग्यता कितनी है। विकसित होने का अर्थ है अपनी अंतर्निहित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शक्तियाँ, अपनी क्षमताएं बढ़ाना। प्रगति करने का अर्थ है- अब तक अधिकृत योग्यताओं को बिना रुके निरंतर पूर्णता की ओर ले जाना। बुढ़ापा आयु बड़ी हो जाने का नाम नहीं है, बल्कि विकसित होने और प्रगति करने की अयोग्यता का पर्याय है। जो अपने आप को निष्कपट, साहसी, सहनशील, ईमानदार बना सकेगा, वही राष्ट्र की सर्वाधिक सेवा करने के योग्य है। उसे ही अद्वितीय एवं महान् कहा जा सकता है।

राष्ट्र के उन सभी छात्र-छात्राओं, युवक-युवतियों को युग का आह्वान है, जो न केवल स्वयं को, बल्कि समूचे राष्ट्र को सुशिक्षित, सुसंस्कारित एवं स्वावलंबी बनाना चाहते हैं। जिनके हृदय में कसक है, अपनी राष्ट्रीय परिस्थितियों के प्रति विकलता का भाव है, जिनका मन कुछ सार्थक करने के लिए व्याकुल, बेचैन है। उनकी शक्ति से ही राष्ट्रीय नव निर्माण की चतुरंगिणी खड़ी की जायेगी, जो सृजन का सार्थक एवं सफल अभियान रचेगी।

राष्ट्र की सभी युवा भावनाओं को संबोधित करते हुए चिरयुवा स्वामी विवेकानंद ने कहा था-'हम सभी को इस समय कठिन श्रम करना होगा। हमारे कार्यों पर ही भारत का भविष्य निर्भर है। देखिये! भारतमाता धीरे-धीरे आँख खोल रही हैं। अब तुम्हारे निद्रामग्न रहने का समय नहीं है। उठिये और माँ भगवती को जगाइये और पूर्व की तरह उन्हें महागौरव मंडित करके, भक्तिभाव से उन्हें अपने महिमामय सिंहासन पर प्रतिष्ठित कीजिए।'

इसके लिए सर्वप्रथम प्रत्येक युवा को पहले स्वयं मनुष्य बनना होगा। तब वे देखेंगे कि बाकी सब चीजें अपने आप ही स्वयं उनका अनुगमन करने लगेंगी। परस्पर के घृणित भाव को छोड़िए, एक दूसरे से विवाद तथा कलह का परित्याग कर दीजिए और सदुद्देश्य, सदुपाय, सत्साहस एवं सद्वीर्य का आश्रय लीजिए। किंतु भलीभाँति स्मरण रखिए, यदि आप अध्यात्म को छोड़कर पाश्चात्य भौतिकता प्रधान सभ्यता के पीछे दौड़ने लगेंगे, तो फिर प्रगति के स्वप्न कभी भी पूरे न होंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एकमात्र भारत के पास ही ऐसा ज्ञानलोक विद्यमान है, जिसकी कार्यशक्ति न तो इंद्रजाल में है और न छल-छद्म में ही। वह तो सच्चे धर्म के मर्मस्थल उच्चतम आध्यात्मिक सत्य के अशेष महिमामंडित उपदेशों में प्रतिष्ठित है। जगत् को इस तत्त्व की शिक्षा प्रदान करने के लिए ही प्रभु ने भारत एवं भारतीयता को विभिन्न दुख-कष्टों के भीतर भी आज तक जीवित रखा है। अब उस वस्तु को स्वयं में चरितार्थ करने का और अन्यों को प्रदान करने का समय आ गया है। 'हे वीर हृदय, भारत माँ की युवा संतानों ! तुम यह विश्वास रखो कि अनेक महान् कार्य करने के लिए ही तुम लोगों का जन्म हुआ है। किसी के भी धमकाने से न डरो, यहाँ तक कि आकाश से प्रबल वज्रपात हो तो भी न डरो। उठो! कमर कसकर खड़े होओ और कार्यरत हो जाओ।'

राष्ट्रीय युवाशक्ति के महानायक स्वामी विवेकानंद की इन्हीं भावनाओं को परमपूज्य गुरुदेव ने व्यावहारिक एवं व्यापक स्वरूप प्रदान किया है। युग निर्माण मिशन अपने आप में युवा भावनाओं का समर्थ एवं सशक्त संगठन है। इन पंक्तियों के माध्यम से आह्वान है राष्ट्र की प्रबुद्ध एवं भावनाशील युवाशक्ति का जो अपने हृदय की धड़कनों में युग की वर्तमान चुनौतियों को अनुभव करती है और इनका निराकरण करने के लिए कुछ कर गुजरने की चाह रखती है।

- कर्म करने से पहले सोचना बुद्धिमानी है।
- कर्म करते समय सोचना सतर्कता है।
- कर्म करने के बाद सोचना मूर्खता है।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org